ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कहानी संग्रह "सलाम" में दलित स्वर

1.एन.बी.एन.वी. गणपति राव,
शोधार्थी, पी.आर.गवर्नमेंट कॉलेज, काकिनाडा,
आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय,
राजमंड्री, आँध्रप्रदेश,

2.डॉ. पि. हरिराम प्रसाद,
हिंदी विभागाध्यक्ष,
पी. आर. गवर्नमेंट कॉलेज, काकिनाडा।

कहानी संग्रह:सलाम

बीज शब्द: ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्यकार, संघर्ष

दलित श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो मानवीय अधिकारों से वंचित, सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ण-व्यवस्था से बाहर, जिसमें भूमि हीन, गरीब किसान, खानाबदोश जाति और नारी समाज दलितों में है। इन पर अनादिकाल से सवर्ण समाज ने अन्याय, अत्याचार किया है। ऐसे दलित समाज का चित्रण ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी संग्रह 'सलाम' में हुआ है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की 14 कहानियों का संग्रह 'सलाम' नाम से प्रकाशित हुआ जो अपने कथ्य और शिल्प के कारण हमारा ध्यान खींचता ही नहीं, अपितु अपने सरोकारों के कारण भी हमें दिल दहला देने वाली स्थितियों से गुज़रने को मजबूत करता है। जहाँ समाज त्रासद स्थितियों के कारण अपमान झेलते स्त्री-पुरुष, जमाने की गंदगी साफ करती औरतें, उत्पीड़न के दर्द को सहकर शोषण दुनिया को बदलने का सपना देखने वाले लोग जो लड़ते जरूर है लेकिन जीत नहीं पाते। लेकिन इन कहानियों में उस सपने को जिंदा रखने का वह जज्बा भी दिखाई देता है कि इस लड़ाई में जीतेंगे जरूर, चाहे उसमें समय कितना भी लग जाए। इसी आशा और विश्वास की कहानियाँ हैं सलाम की कहानियाँ।

1.सलाम:

इस संग्रह की पहली कहानी 'सलाम' वास्तव में बहुत अच्छी कहानी है। इस कहानी का नायक हरीश भंगी समाज से संबंधित है। पूरी कहानी का ताना-बाना हरीश की शादी के चारों ओर बुना हुआ है। हरीश का एक मित्र कमल उपाध्याय है, जो उसकी शादी में विवाह की तैयारी से लेकर अंत तक अपनी भागीदारी निभाता है। हरीश की बारात देहरादून से मुजफ्फरनगर के पास के एक गाँव में पहुँचती हैं। अगले दिन सुबह कमल को चाय की तलब लगती है और वह ढूँढते हुए गाँव की एक चाय की दुकान पर पहुंचता है। दुकान वाला यह जानकर कि यह देहरादून से जुम्मन चूहडे के यहाँ बारात में आया है, तो चूहड़ा (भंगी) ही होगा। कमल को चाय देने से मना कर देता है। यहाँ उससे अपमानजनक स्थिति से गुजरना पड़ता है। उस चाय वाले और कमल के संवादों के माध्यम से आप भली भांति समझ सकते हैं-"चूहड़े चमारों को मेरी दुकान पर चाय ना मिलती... कहीं और जाके पियो।"1 तो कमल उससे जाति पूछ लेता है। इस पर चाय वाला कहता है कि- "चाय वाला भभक पड़ा- मेरी जात से तुझे क्या लेणा- देणा। इब चूहडे चमार भी जात पूछने लगे...। कलजुग आ गया है, कलजुग।"

"हाँ, कलजुग आ गया है, सिर्फ तुम्हारे लिए, तुम अपनी जात नहीं बताना चाहते हो तो सुनो- मेरा नाम कमल उपाध्याय है। उपाध्याय का मतलब तो जानते ही होंगे, या समझाऊँ... उपाध्याय यानी ब्राह्मण।" कमल ने आँखें तरेर कर कहा। "चूहडों की बारात में बामन?" चाय वाला कर्कशता के साथ हँसा। "सहर में चूतिया बणाना... मैं तो आदमी कू देखते ही पिछाण (पहचान) लूँ... कि किस जात का है?" चाय वाले ने शेखी बघारी।2

कमल और चाय वाले का वार्तालाप सुनकर वहाँ भीड़ जमा हो गयी। कमल चाय वाले का विरोध करने के लिए बोलता है-"भाइयों..." उसकी बात पूरी होने से पहले ही रामपाल ने उसे डांटा- "ओ, सहरी जनखे हम तेरे भाई हैं?- साले जबान सिभाल के बोल, गाँड में डंडा डाल के उलट दूँगा।"3 यहाँ पर कमल ब्राह्मण होते हुए भी चूहडे की बारात में शामिल हैं। इसलिए उसे भी चूहड़ा जाति का समझा जाता है और चाय वाले द्वारा अपमानित किया जाता है।

आगे कहानी की परिणति विद्रोह में होती है। जब कथा नायक हरीश 'सलाम' के लिए जाने से मना कर देता हैं। वह कहता है- "मैं इस रिवाज को आत्मविश्वास तोड़ने की साजिश मानता हूँ। यह सलाम की रस्म बंद होनी चाहिए।"4

इस प्रकार दलित समाज के युवकों में क्रांति की भावना दिखाई देने लगी और स्वाभिमान से जीने की कोशिश करने लगे हैं।

2.सपना:

इस कहानी में हिंदू मानसिकता का वास्तविक चेहरा दिखाने का प्रभावी प्रयास है। मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा से प्रायोजित कार्यक्रम में नटराज ब्राह्मणी संस्कारों में लिप्त अपने सहकर्मी गौतम को स्वयं से तुच्छ मानता है और चप्पलों की देखभाल के लिए पीछे बैठने का उससे आग्रह करता है लेकिन गौतम उसकी चाल को समझ जाता है और इसका विरोध करता है। दलित आलोचक कंबल भारती के अनुसार, "वाल्मीकि की सर्वश्रेष्ठ कहानी मेरी दृष्टि में 'सपना' है, जिसमें अस्पृश्यता के खिलाफ़ ऋषिराज ने जो खुद ब्राह्मण हैं, जबरदस्त विद्रोह किया है। दलित पात्र गौतम ने भी स्वाभिमान पर आँच नहीं आने दी।"5

गौतम की पत्नी तथा बच्चों को पांडाल में आगे बैठा देखकर नटराज की प्रतिक्रिया- "फर्क पड़ता है... पूजा अनुष्ठानों में उन्हें आगे नहीं बैठाया जा सकता? यह रीत है। शास्त्रों की मान्यता है।"6 नटराज ने गहरे अवसाद में भरकर कहा।

गौतम परिवार को आगे से उठाकर पीछे बैठाने की कशमकश में झगड़ा शुरू हो जाता है और अंततः प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम कुरुक्षेत्र का मैदान बन जाता है। ऐसा होते देखकर गौतम वहाँ से चला जाता है। "चलो भाई, हम लोग घर चलते हैं। ऐसे अनुष्ठानों में बैठकर क्या होगा, जहाँ आदमी को आदमी की तरह न समझा जाए।"7

इस कहानी में हिंदू धर्म के पाखंड को पूरी तरह व्यक्त किया गया है।

3 बैल की खाल:

इस कहानी में दलित हृदय को बहुत ही संवेदनशील दिखाया गया है। इसमें जानवरों की खाल उतारने का कार्य करने वाले काले, भूरे नामक दो दलितों की रोजी-रोटी का एकमात्र आधार मरे जानवरों की खाल उतारना है। वे शहर में खाल बेचकर उससे मिलने वाले पैसों से अपनी जीविका चलाते हैं। लेकिन गाँव में जानवरों का डॉक्टर आ जाने से उनके सामने आर्थिक संकट आ जाता है। एक बार वे खाल बेचने जाते है तो उनको रास्ते में रात हो जाती है तथा रास्ते में सड़क पर एक बछिया के दुर्घटना ग्रस्त हो जाने पर वे अपनी खाल की परवाह किये बगैर बछिया को बचाने का हर संभव प्रयास करते हैं। यह कहानी संदेश देती है कि दलित अभावों में रहते हुए भी अविवेकी, हृदयहीन, संवेदन हीन और स्वार्थी नहीं होते हैं। वे मुर्दा पशु की खाल आवश्यक उतरते हैं। लेकिन पशुओं की मौत नहीं चाहते हैं। जीवन का मूल्य समझते हैं।

4 भय:

इस कहानी में दलितों में पनप रही संभ्रांत बनने की इच्छा को लेकर अपनी दलित जाति के प्रति उपेक्षा दिखाने की प्रवृत्ति का चित्रण हुआ है। इसमें दलित दोहरी जिंदगी जीते हैं। वे जो हैं, उसे छिपाते हैं। और जो नहीं है वह दिखाते हैं क्योंकि जाती उनकी योग्यता और क्षमता से ज्यादा महत्वपूर्ण है। कुछ दलित ब्राह्मण बनने की कोशिश में खुले में मांसाहार करना तक

छोड़ देते हैं पर छिप-छिप कर खाते हैं। "जिस दिन रामप्रसाद तिवारी खाना खाता था तो दिनेश की माँ सब्जी में लहसुन और प्याज तक नहीं डालती थी।"

तब यहाँ पर सवाल यह उठता है कि क्या दलित दूसरों की इच्छाओं के अनुसार ही जीए-मरे? इस कहानी का पात्र दिनेश हमेशा इस भय से ग्रस्त रहता है कि कहीं अपनी वर्णगत पहचान अन्य लोगों के सामने न आ जाए।

5.कहाँ जाये सतीश?:

यह है कहानी दलित बालक की शिक्षा की समस्या को उजागर करती है। कहानी में सतीश नामक बालक चूहडा जाति का है। वह पढ़ना चाहता है, परंतु उसके माँ-बाप उसे सफाई कर्मचारी बनाना चाहते हैं। इसलिए वह घर से भाग जाता है तथा एक फैक्टरी में पार्ट-टाइम काम करता है तथा जहाँ पर किराये के मकान में रहता है वहाँ जाति का पता लगने पर उसे बाहर निकाल दिया जाता है। तब वह अपने फैक्टरी मालिक से रात में फैक्टरी में रुकने की कहता है तो वह भी मना कर देता है। ऐसी स्थिति में सतीश के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं। केवल भंगी का होने के कारण दलितों के विकास के सारे रास्ते इस सामाजिक वर्ण-व्यवस्था ने पहले से ही बांध किए है तो सतीश जैसे बालकों की क्या स्थिति होगी?

6 गोहत्या:

यह कहानी हिंदू समाज की संवेदन हीनता का चित्रण करती है। यह सामंतों द्वारा दलितों के निजी जीवन में अनधिकार हस्तक्षेप के विरोध की कहानी है। इसमें सामंतों की धूर्तता को दिखाया गया है कि अपना बदला लेने के लिए वह किस हद तक जा सकते हैं। कहानी का नायक सुक्का ने अपनी पुरखों की रीति के अनुसार मुखिया के घर अपनी पत्नी को न भेजने की हिम्मत की, जिसके बदले उसको गोहत्या के आरोप में फँसाया गया। गाँव में सवर्णों की पंचायत बैठी, जिसमें मुखिया ने योजनाबद्ध तरीके से एक लोटा में पाँच- पाँच पर्चियाँ डाली। शर्त रखी गई कि जिसका नाम निकलेगा वही को हत्या का अपराधी माना जायेगा। पर्ची निकाली जाती है और नाम आता है सुक्का का। यहाँ प्रश्न उठता है कि उस लोटे में सिर्फ दलितों के ही नाम क्यों डाले गये? अगर किसी सवर्ण जाति का नाम डाला जाता और उसमें से सुक्का का नाम बाहर आता तब उसे दोषी माना जाता। लेकिन यहाँ तो सजा सिर्फ नीचे जाति को ही देनी थी। "सजा थी हल के लोहे की फाल को आग में तपाया जायेगा जिसे दोनों हाथों में थामकर सुक्का 'गउमाता- गउमाता' कहता दस कदम चलेगा। अगर वह गोहत्या नहीं किया है, तो गर्म लोहे की फाल उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।"8 यहाँ गर्म लोहे की तुलना सीता के अग्निपरीक्षा से की गयी है। यहाँ सुक्का को पूछना चाहिए कि वह कौन सी वस्तु है जो आग में नहीं जलती। लेकिन उसे समाज ने तर्क करने का अधिकार ही नहीं दिया था। यह सजा सुनकर मुखिया पंडित रामसरण मन ही मन कहता है,"देख लिया बच्चू, हम से उलझने का अंजाम।"9

विडंबना यह है कि लोहे को गर्म एक दलित करता है और दलित को ही सजा दी जाती है, जिसके गवाह पंचायत में बैठे दलित ही थे, उन्हें इस अन्याय का एहसास भी है, लेकिन वह विरोध नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें डर है कि वह घर से बेघर हो जाएंगे।

7 ग्रहण:

यह कहानी ग्रामीण आभिजात्य परिवारों की औरतें दलित जाति के लोगों का किस तरह इस्तेमाल करती है, उसका जीवंत उदाहरण है। इस कहानी में स्पष्ट रूप से बताया जाता है कि चौधरी परिवार के बेटे बिरम की बहू को पति की नपुंसकता के कारण बांझ बताकर प्रताड़ित किया जाता है, तो वह चंद्रग्रहण की रात में रमेसर से संभोग कर बालक प्राप्त करती है। इस कहानी का विस्तार अगली कहानी 'बिरम की बहू' में हुआ है, जिसमें रमेसर सोचता है कि किस तरह देह और संवेदन के धरातल पर अभिजात्य परिवारों की आवृत्ति दलित युवकों को छलती है।

8 बिरम की बहू:

बिरम की बहू नामक कहानी में उच्च जाति की बहू का भंगी जाति के लड़के के साथ अंतरंग संबंधों की चर्चा है ऐसा संबंध जो एक क्षण में पैदा हो गया। दोनों कोठरी के अंदर गेहूँ की बोरी उठाने बहाने जाते है और उसी समय दोनों एक दूसरे को हो जाते हैं और अपने आप पर काबू न पाकर बिरम की बहू अपने आप को सौंप देती है। कुछ महीनों बाद वह गर्भवती हो जाती है जो उसे सबसे बड़ा फल मिल गया था, क्योंकि वह बेऔलाद थी। इससे उस पर बाँझपन का कलंक खत्म हो गया और समाज व जाति के भय से कभी भी दोबारा सम्बन्ध नहीं बन सका।

9 पच्चीस चौका डेढ सौ:

यह कहानी ग्रामीण दलितों की अज्ञानता को रेखांकित करती है तथा कहानी के मूल में छल-बल, कपट, झूट, धोखा और ठगी जैसी समस्या विद्यमान हैं। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में तथाकथित सभ्य कहे

जाने वाले जमींदारों द्वारा दलितों को पीढ़ियों से अनपढ़ और भूमि आदि साधनों से वंचित रखकर ठगी-प्रपंच करने वाली साजिश का पर्दाफाश इस कहानी में किया गया है।

सुदीप ने पच्चीस का पहाड़ दोहराया और जैसे ही पच्चीस चौका सौ कहा, उन्होंने टोका- नहीं बेट्टे... पच्चीस चौका सौ नहीं... पच्चीस चौका डेढ सौ...'' उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से कहा।

सुदीप ने चौंककर पिताजी की ओर देखा। समझाने के लहज़े में बोला, ''नहीं पिताजी... पच्चीस चौका सौ ...यह देखो गणित की किताब में लिखा है।''

''बेट्टे, मुझे किताब क्या दिखावे हैं। मैं तो हरफ (अक्षर) बी ना पिछाणूँ। मेरे लेखे तो काला अच्छर भैंस बराबर है। फिर बी इतना तो जरूर जाणूँ कि पच्चीस चौका डेढ सौ होता है।''10 पिता सहजता से कहा।

10.अन्धड़:

इस कहानी में पढ़े-लिखे लोग अपने दलित समाज को सुधारने की बजाय अपने समय से दूर भगाते दिखाई देते हैं। अपने जाति के नाम पर सामाजिक घृणा दलितों में हीन भावना भर रही है। उन्हें अपने समाज की दयनीय स्थिति की शर्म आने लगी है। इस कहानी में मिस्टर लाल ऐसे समाज के प्रतिनिधि पात्र हैं जो दलित होने के बावजूद अपनी जाति छुपाकर रखते हैं तथा अपना नाम बदलकर सुक्कड़ लाल की जगह एस. लाल रखते हैं तथा अपने परिवार वालों से मिलना-जुलना बंद कर देते हैं क्योंकि उनका रहन-सहन निम्न है लेकिन जब मिस्टर लाल की पत्नी सविता मायके जाने को कहती है तो वे बिफर पड़ते हैं- ''सविता के ख्यालों में वह दिन उभर आया, जब मायके जाने के सवाल पर दोनों के बीच कहा-सुनी हुई थी। मैं जिसे जिंदगी से तुम्हें बाहर निकालना चाहता हूँ... तुम लौट-लौटकर उसी में जाना चाहती हो। तुम वहाँ जाओगी, तो वे भी यहाँ आयेंगे। मैं नहीं चाहता यहाँ लोगों को पता चले कि हम एस.सी. हैं जिस दिन लोग ये जान जायेंगे, यह मान- सम्मान सब घृणा-द्वेष में बदल जाएगा।''11

सच्चाई यह है कि दलित समाज स्वाभिमान से जीना चाहता है, लेकिन भारतीय समाज में मान उसी को मिलता है जिसकी जाति ऊँची है। दलित व्यक्ति कितना भी बड़ा अफसर क्यों न हो, उसके साथ उसकी जाति चिपकी रहती है।

11 जिनावर:

कहानी के माध्यम से एक ऐसी औरत की आवाज को उठाया गया है जो दर-पर-दर दिखती चली गई। पहले बाप का साया सिर पर से उठ गया, मामा उसके पास माँ सहित रहने लगी। जब जवानी की दहलीज पर कदम रखा तो मामा ने जबरदस्ती करके शील भंग कर दिया और सारी जिंदगी तबाह कर दी, माँ को बताया पर और कहीं सिर ढकने को जगह नहीं थी इसलिए चुप चाप यह दंश सहन करना पड़ा, बाद में बिरजू से ₹5000 लेकर बेच दिया और जवान लड़की की शादी एक मंदबुद्धि इंसान से कर दी। ससुराल में ससुर भी डोरे डालता था और इस प्रकार उस औरत का सारा जीवन इसी प्रकार पर-पुरुषों की कठपुतली बन गए बनकर रह गया।

12 कुचक्र:

कुचक्र कहानी में रचनाकार ने सामंतों की मानसिकता की ओर इशारा करते हुए ये बताया है कि नीच जाति के विषय में उच्च कुल की मानसिकता यही है कि वे केवल नीच कार्य ही कर सकते हैं। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए यह लोग किसी भी हद तक जाने से परहेज नहीं करते। निम्न श्रेणी के लोगों को ऊपर उठता हुआ देख पाना इन्हें बर्दाश्त नहीं होता।

13 अम्मा:

इस कहानी की 'अम्मा' और 'हरदेई' जो घरों में पाखाना साफ करने का काम करती है, 'भंगी' जाति की औरतें हैं। वे दोनों सच्चरित्र और खुद्दार हैं। चौपड़ा परिवार के घर में मिसेज चौपड़ा का आशिक 'विनोद' जब टट्टी में पानी डालते हुए अम्मा को लपेट लेना चाहता है, तो वह उसकी झाड़ू से पिटाई करती है तथा मिसेज़ चौपड़ा से कहती है- ''भैण जी इस हरामी के पिल्लै से कह देणा... अर औरत छिनाल ना होवे।''

इस कहानी में अम्मा एक स्वाभिमानी, परिश्रमी और सच्चरित्र महिला हैं, जो अपना नाम पहचान खोकर एक भाववाचक संज्ञा बनकर रह गई है। वह मेहनत की कमाई से बच्चों को पढ़ा लिखाकर सामान का जीवन जीने की शिक्षा देती है। अपमानित कार्य की प्रतीक झाड़ू को वह हाथ नहीं लगाने देती। इस प्रकार 'अम्मा' दलित स्त्री की खुद्दारी का जीवंत उदाहरण है। लेकिन उसका ही एक बेटा नगरपालिका की नेतागिरी करते हुए अपने ही लोगों को सताता है तो अम्मा उससे साफ-साफ कहती है ''शिबु, आजकल तू जो करें है, हाई

ठीक ना है... जो मैंने पाता होता कि तू इस तरियो पैसा कमावे है, तो मैं तेरे पैसे कू हाथ भी ना लगाती। तैन्नै पढ़ा-लिखा दिया। तेरी साद्दी (शादी) कर दी... मेरा काम खत्म... अच्छा इनसान ना बणा सकी यो मेरा कसूर। कल से अपना चौका-चूल्हा अलग कर ले... मन्नै ना खाणी इस कमाई की रोटी। अलग रहके चाहे किसी ने लूट या मार... मेरे से कोई मतलब नहीं।"12

14.खानाबदोश:

यह कहानी भट्ठा मजदूरों के जीवन से संबंधित है। भट्टे पर महेश और किशनी काम करते हैं। किशनी धीरे-धीरे भट्ठा मालिक के लड़के सूबेसिंह की रखैल बन जाती है। यहीं पर सुकिया और उसकी पत्नी मानो भी काम करते हैं। मानो सुबेसिंह के चक्कर में आने से मना कर देती है, अतः उनका उत्पीड़न आरंभ हो जाता है और अंततः भट्टे का काम छोड़कर अपने घर लौटना पड़ता है। वे एक इंसानी जीवन जीना चाहते हैं। रहने के लिए अपने हाथों से पाथी गयी लाल-लाल ईंटों से एक छोटा घर बनाना चाहते हैं, लेकिन कठोरतम प्रयास करने के बावजूद उनका सपना अधूरा रहता है, बल्कि काम की तलाश में खानाबदोश जीवन जीना पड़ता है। इस प्रकार दलित समाज के लोग अपन जाति- बिरादरी से दूर होने की कोशिश कर रहे हैं और अपने आप को ऊँची जातियों में ढालने के कारण वे अपने ही समाज को घृणा की नजर से देखने लगे हैं। समाज के प्रति अपना कर्तव्य भूल गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन,2000, पृ.12

2 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.12

3 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.13

4 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.17

5 कंवल भारती- पूर्वदेवा, जुलाई-सितंबर,1996 पृ.94

6 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ. 29

7 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.30

8 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.57

9 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.62

10 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.80

11 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.86

12 सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.119